आमिर खान की फ़िल्मों का सामाजिक यथार्थ

शोध समीक्षा

एम. फिल. जनसंचार विभाग हेतु प्रस्तुत शोध की समीक्षा
सत्र : 2016 -17

जनसंचार विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

निर्देशक
डॉ. रेणु सिंह (सहायक प्रोफ़ेसर)
जनसंचार विभाग

शोधार्थी
अरुण कुमार जायसवाल
2016/05/208/005
2016-17

शोध सारांश

संचार हमारे दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग होता है । प्रत्येक समाज का अपना एक दायरा होता है । जिस समाज में हम रहते है, उसमें जीवन बसर व लोगो से जुड़ाव के लिए संचार का अहम योगदान होता है । संचार के विभिन्न माध्यमों का प्रयोग अलग अलग समाज व समुदाय की पहुँच के अनुसार किया जाता रहा है । संचार के सभी माध्यमों में सिनेमा एक सशक्त माध्यम के रूप में देखा जाता है । चूंकि आज भी सिनेमा की पहुँच देश के कोने कोने तक नही है लेकिन फिर भी सिनेमा आज संचार के सबसे प्रभावशाली माध्यम के रूप में स्थापित है । जब कभी भी फ़िल्मों से समाज को जोड़ा जाता या फ़िल्मों में समाज को ढूँढा गया है दरअसल वहा बात सामाजिक यथार्थ की होती है ।

प्रारम्भ से ही भारतीय फिल्मों में गाँव, समाज और आम जीवन को देखा जा सकता हैं । जब भारतीय सिनेमा अपने शैश्वावस्था में था, तब सिनेमा में सत्यजीत रे और भुवन शोम जैसे फ़िल्मकारों ने सिनेमा को समाज से जोड़कर नई दिशा प्रदान करने की कोशिश की, जो कि सफल भी रही । लेकिन जैसे जैसे भारतीय सिनेमा का विस्तार होता गया, सिनेमा का स्वरूप और उसके उद्देश्य में भी हम बदलाव देख पाते हैं । सिनेमा हमेशा से मनोरंजन के साधन के साथ साथ समाज का आइना भी रहा है, लेकिन बदलते समाज और बाजार को ध्यान में रखते हुए, व्यवसायिक हित को भी साधना भारतीय सिनेमा जगत के लिए किसी चुनौती से कम नही थी ।

आज जब सिनेमा पूर्ण रूप से व्यवसायिक हो चुका है, कुछ निर्देशक व निर्माता ऐसे भी हैं जो समाजिक मुद्दों को वास्तविकता के धरातल पर उठाते हुए व्यवसायिक रूप से भी सफल नजर आते हैं । फ़िल्म और मीडिया जगत में अनेक ऐसे नाम हैं जिन्होंने अपने कार्य के साथ साथ सामजिक क्षेत्र में भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है । इसी आधार पर हम एक नाम प्रसिद्ध फ़िल्म निर्देशक, अभिनेता और निर्माता आमिर खान का देख सकते है । जो पर्दे से लेकर जमीं तक समान रूप से सक्रिय दिखते है । आमिर खान आज के सिनेमा जगत में एक ऐसा नाम है, जो अपने काम और समाज के प्रति विशेष दृष्टि की वजह से जाना जाता है । यदि हम सिनेमा जगत और समाज की मौजूदा स्थिति का आकलन करें तो आमिर वर्तमान समय के सिनेमा के माध्यम से समाज को कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष रूप से आइना दिखाने का काम करते है । आमिर खान ने अपने फ़िल्मी करियर में आगे बढ़ते हुए समाज में अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है । यदि हम आमिर के शरुआती दौर की फ़िल्मों से लेकर अभी तक के फ़िल्मों को देखे तो हम उनमे सामाजिक रूप से विशेष बदलाव पाते है । निरंतर आमिर की फ़िल्मों में समाज के उस सच

को देखा जा सकता है जो शायद ही किसी और फ़िल्मों में उतनी भली-भाति प्रस्तुत की जाती हो। चूंकि फ़िल्मों का फिल्मांकन तो निर्देशक के ऊपर निर्भर करता लेकिन एक नामी और चर्चित अभिनेता का प्रभाव भी उस पर जरुर पड़ता है। ऐसे में आमिर के खुद के प्रोडक्शन खोलने के बाद से यदि हम देखे तो उनके फ़िल्मों के चयन से लेकर प्रस्तुतिकरण में हम समाज के एक बड़े सच को पर्दे पर देख पाते है। जिससे उनके बदलते सामाजिक दृष्टि व सोच का आकलन भी किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में आमिर खान की फिल्मों का समाज से जुड़ाव व उसमे समाहित सामाजिक यथार्थ को जानने व उनका आकलन करने की कोशिश की गयी है। आमिर खान की फिल्मों का सामाजिक यथार्थ के अध्ययन के साथ ही आमिर खान के बदलते सामाजिक दृष्टिकोण का आकलन किया गया है। सबसे पहले इस शोध पत्र के पहले अध्याय में हिंदी सिनेमा के समाजिक यथार्थ पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय को दो भागों में विभक्त किया गया है। जिसके पहले भाग में समाज व यथार्थ को संक्षिप्त में परिभाषित करते हुए समाजिक यथार्थ को समझाने की कोशिश की गयी है। दूसरा भाग हिंदी सिनेमा के सामाजिक सरोकार व यथार्थ पर प्रकाश डालता है। जिसमें हिंदी सिनेमा के सवर्ण काल पर प्रकाश डालते हुए उस दौर के सिनेमा और समाज पर चर्चा की गयी है। इस भाग में हिंदी सिनेमा के समाजिक जुड़ाव व बदलते सिनेमा पर मौजूद साहित्य को भी शामिल किया गया है।

इस शोध पत्र के द्वितीय अध्याय के पहले भाग में आमिर खान के व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डालते हुए, उनके सिनेमाई सफ़र के बारे में संक्षिप्त टिपण्णी की गयी है। इस अध्याय के दूसरे भाग में आमिर खान की कुछ मुख्य फिल्मों पर प्रकाश डालते हुए उनमे समाहित मुद्दों और आमिर का फिल्मों के प्रति बदलती दृष्टि का अधययन करने की कोशिश की गयी है। जिनमे आमिर द्वारा अभिनीत और निर्देशित फ़िल्मों के अतिरिक्त उनके प्रोडक्शन में बनी फ़िल्मों को भी शामिल किया गया है। कुछ मुख्य फ़िल्में इस प्रकार है – **'लगान', 'रंग दे बसंती', 'थ्री इडियट्स', 'पिपली लाइव', 'पीके', 'तारे जमीं पर', 'धोबी घाट' और 'दंगल' आदि**। इन सभी फ़िल्मों पर बात करते हुए इनके समाज से जुड़ाव का आकलन किया गया है।

इसके बाद तृतीय अध्याय में शोध प्राविधि और उद्देश्य के बारे में चर्चा की गयी है। जिसमें शोध के उद्देश्य एवं महत्व, उपकल्पना, शोध की सीमा व प्रयोग किये जाने वाले शोध उपकरणों के बारे में बताया गया है।

इस शोध पत्र का चौथे अध्याय में आकड़ों के विश्लेष्ण को प्रस्तुत किया गया है। शोध के लिए आमिर की दो मुख्य फिल्मों को चुना गया है, जिसमें आमिर द्वारा निर्देशित 'तारें जमीं पर' तथा आमिर

द्वारा अभिनीत और प्रोड्यूस 'दंगल' शामिल हैं। इन दोनों फिल्मों का विश्लेष्ण कुछ चयनित चरों व अन्य द्वितीयक आकड़ों के आधार पर किया गया है। इस अध्याय के दूसरे भाग में एकत्रित प्राथमिक आकड़ों का अध्ययन और विश्लेषण कर दर्शकों के मतों का संयोजन किया गया है।

अंततः इस शोध पत्र का आखिरी और पांचवां अध्याय विमर्श व निष्कर्ष को प्रस्तुत करता है। जिसमें एकत्रित आकड़ों के अध्यन व संयोजन के आधार पर उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए परिकल्पनाओं का परिक्षण किया गया है। इसके उपरांत निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध पत्र के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति की गयी है -

१- आमिर खान द्वारा अभिनीत, निर्देशित और प्रोड्यूस फ़िल्मों के सामाजिक अंतरसंबंध को समझना।

२- बदलते समय और समाज के अनुरूप आमिर के फ़िल्मों के चयन दृष्टि का अध्ययन करना।

३- सिनेमा के व्यवसायीकरण के दौर में आमिर खान द्वारा प्रोड्यूस फ़िल्मों के सामाजिक यथार्थ का अध्ययन करना।

४- आमिर खान द्वारा निर्देशित फ़िल्मों में समाहित सामाजिक मुद्दों/यथार्थ और उनके समाजिक महत्व का अध्ययन करना।

५- आमिर के फ़िल्मों का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव और बदलाव का अध्ययन करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साक्षात्कार, अंतर्वस्तु विश्लेषण और प्रश्नावली का प्रयोग शोध उपकरण के रूप में किया गया है। आमिर के कुछ मुख्य फिल्मों को लेते हुए आमिर द्वारा अभिनीत और प्रोड्यूस 'दंगल' व निर्देशित 'तारें जमीं पर' का विश्लेषण करते हुए 50 दर्शकों से खुली प्रश्नावली द्वारा उनके मत को एकत्रित कर उनका संयोजन किया गया है। खास तौर पर उन्ही दर्शकों को चुना गया हैं, जिन्होंने आमिर की अधिकतर फ़िल्में देखीं हों। फ़िल्म समीक्षक अजय ब्रह्मात्मज, जयप्रकाश चौकसे और पत्रकार व फ़िल्म समीक्षक अजित राय से बातचीत के माध्यम से आमिर की फिल्मों पर मिले उनके विचारों के माध्यम से आकड़ों को एकत्रित कर उनका संयोजन किया गया हैं। आमिर के 'दंगल' व 'तारें जमीं पर' के साथ साथ अन्य फिल्मों का अंतर्वस्तु विश्लेष्ण और दर्शकों से मिले मतों के आधार पर उपकल्पना का परिक्षण किया गया है। इसके पश्चात उद्देश्य व उपकल्पना को ध्यान में रखते हुए निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

आमिर के स्टारडम के साथ साथ अपनी विशेष चयन की वजह से उनकी फिल्मों में सामाजिक मुद्दों व यथार्थ का जुड़ाव अधिक दिखता है। आम फिल्मों की तरह आमिर ने भी शुरूआती दौर में मसाला, रोमांस और एक्शन फिल्मों का अधिक चयन किया। लेकिन बदलते समय के हिसाब से आमिर अपनी सोच परिवर्तित करते हुए फिल्मों के चयन में काफी सजग नजर आते हैं | पिछले एक दशक में आमिर की फिल्मों में सामाजिक मुद्दों का अधिक समावेश देखने को मिलता है। अब तक आमिर की फिल्मों में नारी सशक्तिकरण, देश-प्रेम, दहेज-प्रथा, शिक्षा व्यवस्था और अंध विश्वास आदि जैसे मुद्दों को देखा जा सकता है। साथ ही उनकी प्रस्तुतिकरण का तरीका लोगो को सोचने पर जरुर मजबूर करता है। इससे इतर आमिर ने पूर्ण व्यवसायिक फिल्मों को भी किया है लेकिन इनके अधिकतर फ़िल्म जो सामाजिक व्यवस्था या मुद्दों पर आधारित रही है, ज्यादा प्रभावी साबित होती है।

'दंगल' में आमिर ने नारी सशक्तिकरण, लैंगिक असमानता, खिलाडियों की यथास्थिति, ग्रामीण परिवेश व सोच, अंध विश्वास तथा मध्यमवर्गीय पारिवारिक स्थिति आदि मुद्दों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उठाया है। वहीं आमिर द्वारा निर्देशित 'तारें जमीं पर' में शिक्षा व्यवस्था, परिवारिक स्थिति व डिस्लेक्सिया के माध्यम से बच्चो की समझ आदि पर सवाल खड़ा करते हुए देखा जा सकता है।

नब्बे के दशक आखिरी में आमिर की फिल्मों में एक विशेष बदलाव देखा जा सकता है। 1996 के बाद आमिर ने हर साल लगभग एक ही फ़िल्म को किया है। जिनके विषय भी सामान्य फिल्मों से अलग नज़र आते हैं। कही न कही आमिर का खुद बतौर निर्माता और निर्देशक हिंदी सिनेमा में कदम रखना, उनमें अब अधिक परिपक्वता को प्रदर्शित करता है। आमिर शुरूआती दौर की तुलना में अब अधिक सतर्क और चूजी स्वभाव के दिखते हैं। आमिर ने बतौर निर्माता सिनेमा जगत में कदम रखने के बाद अपने प्रोडक्शन तले अब तक केवल 12 फिल्मों को प्रोड्यूस किया है। लगभग सभी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा व्यवसाय करते हुए दर्शकों के दिल में विशेष जगह बनाई है। यदि आमिर द्वारा प्रोड्यूस एक दो फिल्मों को छोड़ दे तो अधिकतर फिल्मों के मुद्दे समाज या हमारे आम जीवन से बुनियादी रूप से जुड़े दिखते है। चाहे बात आमिर की 'पिपली लाइव', 'धोबी घाट', 'तारे जमीन पर' या 'दंगल' की बात करें सभी फ़िल्में किसी न किसी रूप से हमारे समाज और जीवन के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को उठाते हुए नजर आते हैं। आमिर द्वारा पिछले 17 सालों में मात्र 12 फिल्मों का प्रोड्यूस करना, यह साफ साफ दर्शाता है कि आमिर अपने फिल्मों के चयन के मामले में बेहद चूजी स्वाभाव के है। आमिर द्वारा प्रोड्यूस अधिकतर फ़िल्में सामाजिक व बुनियादी मुद्दों से सम्बन्ध रखती है।

आमिर की फिल्मों में जिस तरह से सामाजिक मुद्दों को उठा कर यथार्थ को परोसने की कोशिश की जाती रही है, उससे समाज पर प्रभाव भी देखने को मिलता है। चूंकि आमिर की सारी फिल्मों के लिए यह बात लागू नही होती लेकिन सन् 2000 के बाद के अधिकतर फिल्मों में सामाजिक मुद्दों का जुड़ाव व वास्तविकता के धरातल पर उनका जुड़ाव जरुर देखा जा सकता है। फिल्मों से एक अचानक बदलाव न सही लेकिन आमिर की अधिकतर फ़िल्में लोगो को सोचने पर जरुर मजबूर करती हैं। 'तारें जमीं पर' और 'दंगल' जैसी फिल्मों को देखकर समाज में प्रत्यक्ष रूप से ज्यादा प्रभाव व बदलाव तो नही लेकिन इन फिल्मों में उठाए गये मुद्दों ने लोगो को सोचने पर जरूर मजबूर किया है।

'दंगल' एक बायोपिक फ़िल्म है, जो उस समाज के लिए खुद में प्रेरणा का काम करती है। लेकिन फ़िल्म इस तरह के मुद्दों को उठाकर व्यापक स्तर पर लोगो तक सन्देश पहुँचाकर लोगो को सोचने पर मजबूर करती, और जागरूक करने का काम करती है। आज समाज में लड़कियों का खेल के प्रति रुझान बढ़ा है तथा उनके प्रति कुछ हद तक लोगो की सोच में बदलाव आया है लेकिन अभी भी इसका विस्तार होना बाकी है। वही 'तारें जमीं पर' जैसी फिल्मों से माता-पिता की सोच में कुछ हद तक बदलाव देखने को मिलता है। लेकिन यह अधिकतर वहीं लोग हैं जो शिक्षित और प्रगतिशील सोच के है। अन्यथा आज भी ऐसे तमाम लोग है जो अपने सपनों का बोझ अपने बच्चो पर लादते नजर आते है। साथ ही शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय स्तर पर तो कम लेकिन पारिवारिक स्तर पर कुछ प्रभाव देखने को मिलता है। अतः हम कह सकते है कि आमिर की फिल्मों में समाजिक यथार्थ का जुड़ाव दिखता है तथा आमिर की फिल्मों का समाज पर पूर्ण रूप से प्रभाव तो नही देखा जाता लेकिन व्यापक स्तर पर लोगो को सोचने पर जरूर मजबूर किया है, जिससे सकारात्मक प्रभाव की शुरुआत हो चुकी है, जो काफी हद तक नजर भी आती है।

Research Summary

Communication is an important part of our life. The society where we live, communication works as link between the people and society. Different ways of communication used for different type of works by the several people according to their requirement and the circumstances of the moment. Cinema is also one of the strongest parts of it. Although cinema is so far to reach the every part of society but still it established as more effective medium of communication. The link between Cinema & Society is always stands for social perspective.

From the beginning, the abstract of Indian rural and village area can be found in Indian Cinema. Satyajeet Ray and Bhovan Som tried to decorate the Indian Cinema by capturing the society and its impact through camera and it was successful. But according to time intervals, the Cinema expanded its area and similarly its objectives and intensions also stretched. Cinema is a source of entertainment at the same time it also shows the mirror to the society. But in the time of rapid social development, the focus on commercial benefit is also acceptable and challenging.

There is still some Director and Producer can be found who works beyond the commercial benefits and portray the facts of social issues and even also get success in both commercially and socially. Lot of people has been registered in the field of Cinema and Media as well as in the field of social work. On this basis, we have one Director/Actor & Producer named Aamir Khan. He has a balance on his work from ground to screen. Aamir Khan is one of the most highlighted figure of Film industry who works are remembered for his special attention towards society through his movies. Somehow or indirectly, Aamir's movies are the better example to understand the current situation of society. Aamir established a different identity in society by following his cinema. If we talk about the beginning era of Aamir in film industry, we can find lot of social changes on his movies and his selections. Probably Aamir draws the facts and actual image of society in his movies which is less chance to be found in other movies or cinemas in a perfect way. Although the delineation of the movie depends on the Director but it also has the influence of a popular actor. Suchlike the opening of production house by Aamir Khan can be seen the social facts by his selection of movies and presentation in screen. It also evaluates his different thinking towards the society and its condition.

This research paper evaluates the link between Aamir's movies and society and tries to find the social perspective presented on his movies. The study of social perspective by Aamir's movies also evaluates his social intentions. Firstly, the first chapter of this research paper focused on the social perspective of Hindi Cinema and this chapter further divided into two parts. First part includes a short description of social perspective and the second part focused in the social concern and perspective of Hindi Cinema which contained the area of golden era and society of Indian Cinema. It also includes the social changes and the literary adaptation by cinema.

In the first part of the second chapter, the research talks about journey of Aamir Khan from his personal life to first step in film industry. Second part of the same chapter criticizes the social objectives on some movies directed or acted by Aamir like – Lagaan, Rang de Basanti, 3 Idiots, Pipli Live, PK, Taare Zamen Par, Dhobi Ghaat, Dangal etc.

After this, the third chapter describes the research methodology and motive. On this the research intentions, limitation, emphasis and the instruments of research has been discussed.

The fourth chapter has the statical analysis of this research. The first part of this chapter, two movies of Aamir Khan has been selected for researches which are Tare Zamen Par and Dangal, one is directed and another is produced by him respectively and acted in both. The second part of this chapter contains the study of primarily collected details and also includes the views of audiences.

The final and fifth chapter presents the deliberation and conclusion of the research which examine the hypotheses and presumption on the basis of collected elements and objectives

The following animus has been covered through this research-

1. To understand the social inter-bond of the movies acted, directed or produced by AAmir Khan
2. The selection of movies by Aamir according to time and social changes
3. To study the social perception of Aamir's movies at the time commercial cinema
4. To understand the social intensive of movies directed by Aamir Khan
5. To study the impact of Aamir's movies over the society and the changes occurs

Critical analysis, literary analysis, audience opinions and interviews have been used as research instrument to complete the coverage of the above topics. It has a collaboration of 50 different audience opinions followed by analysis of Aamir's directed Taare Zamen Par and produced Dangal. The research is also supported by the interviews of movie critic Ajay Brahmatyaz, Jaiprakash Chawkashe and journalist & movie critic Ajeet Rai and their thoughts regarding to Aamir Khan's movies and works. The audiences' opinions are used to examine the assumption of Dangal & Taare Zamen Par. Focusing the motive and intentions, the conclusion has been presented.

The link between social perception and movies in Aamir's movie displays his stardom as well as his method of selection for movies. He also selected the movies which contains romance, spiciness or action like ordinary movies during his beginning days. But he becomes more selective on his later films. Since one decade, we can find more infiltration of social objects in his movies. The most popularly covered theme based on social objectives of his movies are; Women Empowerment, Dowry System, Superstition and Education System can be seen more deeply and creamily which presentation always force people to think deep and drastic. Apart from this, Aamir also worked on commercial movies but the effectiveness of the social issues based movies lasted long.

In Dangal, Aamir raises the topics based on Women Empowerment, Rural Environment and Thinking, Superstition, Gender Inequality and Player's Life and the condition of a middle class family in India. In Tare Zaamen Par, he portrays the educational system, family conditions and through dyslexia how to make child understandable.

A slight change can be seen on the 90's movies of Aamir. Aamir worked only for 1 movie per year after 1996 and the themes of every movie are based on different topics. The works in the field of direction and production shows the more maturity in Aamir. He produced 12 movies as a producer before being director. Most of his films are related to the binaries of human life and society. Pipli Live, Dhobi Ghaat, Dnagal or Tare Zameen Par, every movie by him raises some points towards or through the society. His nature of selection can recognize through his works and thought that he produced only 12 movies from last 17 years.

His movies impacted the society more deeply. The way on which he raises the social issues and social perception through his movies is marvelous. Althought it can't be seen on each and every movie of Aamir but after 2000 his selection are evidence to prove his raising and link from substantive level to society. The sudden suspense and changes are less available in his movies but it force people to rethink about social issues. The topics on which Dangal and Tare Zameen Par is based are not occurred any changes but it strikes the brain and nature of thinking of a Human being.

Dangal is a biopic and motivate people as inspirational film. But this movie raises the universal themes and pushed them to the life of common people to awake them from their suffocative existence. In current days a slight change is visible regarding the women sports and a slight change also occurred in peoples' behavior related to women and society but still some more changes needed. Taare Zameen Par strike the thoughts of parents from every class and tried to converted them into a well developed mental personality towards their child otherwise there are lot of guardians who pressure their child to fulfill their own dreams. The educational system on schools as well as home also affected and a newly developed process grown at the same time to educate children more fruitfully. So, we can say that Aamir's movies are not fully impacted or influenced the society but it force people to re-think and re-decide which positive result can be recognize directly in the society.